शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक

प्रो. बी. एल. जैन

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

1. शैक्षिक विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- प्रो. बी. एल. जैन 01-05

2. अध्यापक शिक्षा की समस्याएं

- डॉ. मनीष भटनागर 06-11

3. Action Research : A Remedial Device in Teaching English in India

- Dr. Bhabagrahi Pradhan 12-16

4. अध्यापकों की सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिक स्तर सम्बन्धी समस्या एवं समाधान

- डॉ. विष्णु कुमार 17-23

5. राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी तथा उसकी ई-सुविधाएं

- डॉ. अमिता जैन 24-27

6. वर्तमान शिक्षा के मूल्यों के बदलते प्रतिमान एक चुनौती समाधान

- डॉ. सरोज राय 28-31

7. अध्यापक शिक्षा : पाठ्यचर्या विकास के नूतन आयाम

- डॉ. गिरिराज भोजक 32-36

8. शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

- डॉ. आभा सिंह 37-40

9. अध्यापक शिक्षा में अध्यापन अभ्यास कार्यः समीक्षात्मक अध्ययन

- डॉ गिरधारी लाल शर्मा 41-43

10. सागर ब्लॉक के गंभीरिया गांव के बीड़ी बनाने वाले पालकों का अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन

- डॉ. अदिति गौतम 44-49

11. शिक्षा का अधिकार

- सोनम गंगवाल 50-53

Scanned by CamScanner

अध्यापक शिक्षा में अध्यापन अभ्यास कार्यः समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ गिरधारी लाल शर्मा

"अध्यापक के सामने बड़े से बड़े व्यक्ति ने सिर झुकाया है; सांसारिक ऐश्वर्य एवं विभुता उसके महत्व के आगे तुच्छ है।" एक विचारक की ये पंक्तियां अध्यापक के सार्वभौम महत्व को उजागर करने वाली है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सबसे अधिक सहभागिता शिक्षकों की ही होती है। आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में "शिक्षक का मार्ग त्याग, बलिदान एवं साधना का मार्ग है। उसका जीवन जितना संयमित, सात्विक, नैतिक, निष्काम और अध्ययनशील होगा, वह उतना अधिक प्रभावी काम कर सकेगा।"

भारत में प्राचीनकाल से शिक्षक–शिक्षा की अत्यन्त समृद्ध परम्परा रही है। जिसमें देशकाल एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन होते रहे हैं। वर्तमान विज्ञान एवं तकनीकी के युग में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम में अत्यधिक बदलाव हुए हैं। विभिन्न नवाचारों के प्रयुक्त होने से शिक्षक–शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। भावी शिक्षकों में श्रेष्ठ अध्यापन कौशलों का विकास सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक–शिक्षा में **अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम** की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्यापन अभ्यास को शिक्षक–शिक्षा का प्राण तत्व भी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों में शिक्षकोचित गुणों का विकास करना है। इस कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थी एक नियत अवधि तक विभिन्न विद्यालयों में जाकर शिक्षण कार्य का अभ्यास करते हैं। प्रशिक्षक उनका निरन्तर मूल्यांकन करते हैं तथा उनकी कमियों से उन्हें अवगत कराकर निरन्तर मार्गदर्शन करते हैं। एक शिक्षक अपने शिक्षण को किस प्रकार अधिकाधिक प्रभावशाली बना सकता है, वे समस्त कौशल अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम के दौरान सिखाए जाते हैं। प्रशिक्षणार्थियों को नवीन शिक्षण विधियों, नवीन तकनीकी संसाधनों, शिक्षण सहायक सामग्री (श्रव्य–दृष्य सामग्री) का प्रयोग करने हेतु प्रेरित किया जाता है, ताकि विद्यार्थियों तक विषय–वस्तु को सरल रूप में प्रस्तुत किया जा सके तथा विद्यार्थी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में रूचिपूर्वक सक्रिय सहभागिता निभा सकें।

Scanned by CamScanner

परन्तु वर्तमान में अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम का स्वरूप ही परिवर्तित हो गया है। शिक्षण–कला विकास का यह कार्यक्रम महज औपचारिकता बन कर रह गया है। प्रशिक्षण संस्थाएं इसे निर्धारित प्रारूप के अनुसार संचालित न करके मनमाने ढंग से आयोजित करती है। यदि राजस्थान के संदर्भ में ही बात करें तो स्थिति अत्यन्त निराशाजनक नजर आती है, जिसमें कुछ उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार हैं–

- अनेक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्यापक अभ्यास कार्यक्रम आयोजित ही नहीं करवाया जाता है, महज कागजी कार्यवाही कर ली जाती है।
- कुछ प्रशिक्षण संस्थाओं में निर्धारित समय से अत्यन्त कम समय में ही इसे समाप्त कर दिया जाता है।
- अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थी नवीन शिक्षण विधियों तथा तकनीकी संसाधनों जैसे– एल.सी.डी., प्रोजेक्टर आदि का प्रयोग न के बराबरा ही करते हैं।
- शिक्षक–प्रशिक्षक भी इस कार्य के दौरान निष्क्रिय ही नजर आते हैं। वे अध्यापन अभ्यास के दौरान पर्यवेक्षण कार्य महज औपचारिकता के लिए करते हैं।
- प्रशिक्षणार्थी स्वयं भी इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम को एक बोझ के रूप में लेते हैं तथा न तो वे पूर्ण मनोयोग से पाठ–योजना बनाते हैं और न ही पूर्ण तैयारी के साथ कक्षा में अध्यापन करते हैं।
- प्रशिक्षण अवधि के दौरान अध्यापन अभ्यास के लिए जो समय दिया जाता है वह भी पर्याप्त नहीं होता है।
- अध्यापन अभ्यास के लिए विद्यालय भी पर्याप्त समय तक उपलब्ध नहीं हो पाते हैं, जो एक गंभीर समस्या है।

इस प्रकार अध्यापक शिक्षा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष अध्यापन अभ्यास कार्य की वर्तमान स्थिति संतोषजनक नहीं है। यही कारण है कि हम गुणवत्ता युक्त शिक्षक तैयार नहीं कर पा रहे हैं। हमें इस दिशा में चिन्तन की आवश्यकता है। यदि शिक्षकों में शिक्षण कला का समावेश करना है, गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार करने हैं तो अध्यापक अभ्यास कार्य में सुधार करने ही होंगे। आज यह आवश्यक है कि हम निम्न बिन्दुओं पर गंभीरता से विचार करें –

- अध्यापन अभ्यास कार्य की समय अवधि में वृद्धि की जाए।
- शिक्षक–प्रशिक्षक गंभीरता से पाठ–योजनाओं की जांच एवं पर्यवेक्षण कार्य करें।

Scanned by CamScanner

- प्रशिक्षणार्थियों को नवीन शिक्षण विधियों तथा तकनीकी संसाधनों का प्रयोग करने हेतु प्रेरित किया जाए।
- प्रशिक्षणार्थी रूचिपूर्वक इस कार्यक्रम में सहभागिता निभाएं तथा विषय–वस्तु को नवीन तथ्यों से जोड़कर विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करें ताकि विद्यार्थियों को अधिकाधिक लाभ हो।
- सरकार को अध्यापन अभ्यास हेतु पृथक से प्रशिक्षण विद्यालयों की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि यह कार्य बिना किसी व्यवधान के सम्पन्न हो पाए।
- सभी प्रशिक्षण संस्थाएं निजी स्वार्थों को ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित को दृष्टिगत रखते हुए अध्यापन अभ्यास कार्य को पूर्ण ईमानदारी एवं उत्तरदायित्व के साथ आयोजित करने को दृढ़ संकल्पित हों।

यदि हम उपर्युक्त बातों पर चिन्तन करें तो निश्चित ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार करने में सफल हो सकेंगे जो वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षक, शिक्षार्थी, प्रशासक, नियंत्रक संस्थाएं, सरकार सभी को सम्मिलित रूप से प्रयास करने होंगे तभी अध्यापक शिक्षा की निरन्तर कमजोर हो रही स्थिति को सुधारा जा सकेगा।

सन्दर्भग्रंथ

1. कुलश्रेष्ठ, एस,पी. (2010), शैक्षिक तकनीकी के मूल सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2 पाठक पी.डी. (2008), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3 भट्टाचार्य, जे.सी. (2008), अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. पाठक एवं त्यागी (2007), भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. भाई योगेन्द्रजीत सिंह (2006), शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. माथुर, एस.एस. (2000), शिक्षण कला एवं शैक्षिक तकनीकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

Scanned by CamScanner